IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली का विकास: UPI और भविष्य की चुनौतियाँ

डॉ. नम्रता दुबे

अतिथि विद्वान-वाणिज्य विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश (Abstract)

भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली का विकास एक क्रांतिकारी बदलाव का प्रतीक है, जिसमें यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) **ने प्रमुख भूमिका निभाई है।** 2016 **में नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया** (NPCI) **द्वारा शुरू किया गया** UPI **आज भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था का आधार बन चुका है। यह शोध पत्र** UPI **के विकास, इसके वर्तमान प्रभाव, आर्थिक योगदान और भविष्य की चुनौतियों का विश्लेषण करता है। द्वितीयक डेटा** (RBI, NPCI **रिपोर्ट्स**, BCG **अध्ययन आदि) के आधार पर यह पाया गया कि** 2025 **में** UPI **ने** 228 **अरब से अधिक लेन-देन किए, जिनकी कुल मूल्य लगभग** 300 **लाख करोड़ रुपये थी। जनवरी** 2026 **तक मासिक लेन-देन** 21.7 **अरब तक पहुंच गए, जिनकी मूल्य** 28.33 **लाख करोड़ रुपये है।** UPI **ने** 85% **डिजिटल रिटेल पेमेंट्स का हिस्सा हासिल कर लिया है और** 504 **मिलियन यूजर्स तथा** 65 **मिलियन मर्चेंट्स को जोड़ा है। यह वित्तीय समावेशन,** MSME **विकास और नकद-मुक्त अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे रहा है। हालांकि, भविष्य में साइबर फ्रॉड, आउटेज, डिजिटल डिवाइड, इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी और सिस्टम एकाग्रता जैसी चुनौतियां हैं। शोध से सुझाव मिलता है कि** AI-**आधारित सुरक्षा, ग्रामीण विस्तार, अंतरराष्ट्रीय सहयोग (सिंगापुर,** UAE **आदि) और** UPI Lite **जैसी नवाचारों से इनका समाधान संभव है।**

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, March 2026
Impact Factor: 8.2

यह पत्र भारत को 'विकसित भारत 2047' की दिशा में डिजिटल नेतृत्व प्रदान करने में UPI की भूमिका को रेखांकित करता है।